जीवन में मिली गति को कैसे बनाए रखें

राजा दाऊद* (*भाग* 3) — *विकास

***रविवार का संदेश*, 20 *सितंबर*, 2026**

आज हम दाऊद के जीवन के तीसरे चरण का अध्ययन करते हुए ध्यान केंद्रित करेंगे: 1 शमूएल अध्याय 19–31

यह महान विपत्ति का समय था, लेकिन साथ ही विकास का भी एक चरण था।

दाऊद की आयु लगभग 20–30 वर्ष थी।

आज के संदेश में हम इस समय के दौरान दाऊद के जीवन में हुए "विकास" पर ध्यान केंद्रित करेंगे। अगले सप्ताह हम उसके जीवन के इसी चरण में आई "विपत्ति" से सीख प्राप्त करेंगे।

हम जानते हैं कि गोलियत को मारने के बाद दाऊद की प्रसिद्धि और सार्वजनिक पहचान में अचानक वृद्धि हुई। राजा शाऊल दाऊद के विरुद्ध हो गया, और इसके कारण दाऊद के जीवन में लगभग 10 वर्षों तक बड़ी विपत्ति का समय आया। हालाँकि, हम यह भी देखते हैं कि इस दौरान दाऊद का विकास होता रहा।

इन अगले 10 वर्षों के दौरान दाऊद ने प्रारम्भिक गति को कैसे बनाए रखा और आगे बढ़ाया? उसने किन तरीकों से "विकास" किया, स्वयं को विकसित किया और अपने चरित्र का निर्माण किया?

आइए, निम्नलिखित बातों पर विचार करें:

एक अच्छा मार्गदर्शक गति को बनाए रखने और आगे बढ़ाने में सहायता करता है

1 शमूएल 19:18

जब दाऊद को अपना जीवन बचाने के लिए भागना पड़ा, तब हम सबसे पहले उसे शमूएल के पास जाते हुए देखते हैं। शमूएल उस देश का भविष्यवक्ता था और वही व्यक्ति था जिसने परमेश्वर के निर्देश के अनुसार दाऊद का अभिषेक किया था। दाऊद को शमूएल के साथ कुछ

समय बिताने का अवसर मिला—थोड़ा समय, सम्भवत: कुछ सप्ताह और अधिकतम कुछ महीने।

1 शमूएल 19:18–24 के बाद, पवित्रशास्त्र में शमूएल और दाऊद के बीच किसी और बातचीत का उल्लेख नहीं मिलता, इससे पहले कि शमूएल की मृत्यु हो जाए। 1 शमूएल 19:18 में दाऊद की शमूएल से भेंट से लेकर 1 शमूएल 25:1 में शमूएल की मृत्यु तक, सम्भवत: लगभग एक या दो वर्ष—और शायद उससे कुछ अधिक समय—था। दाऊद के दोबारा शमूएल से मिलने का कोई संकेत नहीं मिलता। दाऊद को अपनी बुलाहट की यात्रा स्वयं करनी पड़ी। फिर भी, शमूएल के साथ बिताया गया वह छोटा-सा समय निश्चय ही उसे स्थिर करने और इस यात्रा के लिए मजबूत बनाने वाला रहा होगा।

मुख्य सीख:

गति को बनाए रखने और आगे बढ़ाने के लिए अपने चारों ओर ऐसे मार्गदर्शकों और लोगों को रखें, जो आपके जीवन में सही मार्गदर्शन दे सकें।

हमें अच्छे मार्गदर्शकों और ऐसे लोगों से सीखना चाहिए, जो हमारे जीवन में सही मार्गदर्शन दे सकें। यह हमारे विकास और अपनी बुलाहट की यात्रा में आगे बढ़ने में सहायता करने के लिए महत्वपूर्ण है।

भले ही आप केवल जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहे हों, फिर भी बढ़ते रहें

जो व्यक्ति सिंहासन के लिए निर्धारित किया गया था, वह अचानक जीवित रहने की स्थिति में धकेल दिया गया। वह अपने जीवन के लिए भाग रहा था—रहने के लिए स्थान, खाने के लिए भोजन आदि खोज रहा था।

दाऊद को अपने और अपने साथ के लोगों के लिए याजक अहीमेलेक से भोजन माँगना पड़ा और उसने मिलापवाले तम्बू का भोजन खाया (1 शमूएल 21)। अतिरिक्त टिप्पणी: यीशु ने मत्ती 12:1–5 में इसका उल्लेख किया।

केवल जीवित रहने के लिए, उसे गत के राजा और पलिश्ती राजा आकीश के सामने पागल होने का ढोंग करना पड़ा (1 शमूएल 21:12)।

बाद में, जब वह अदुल्लाम की गुफा में छिपा हुआ था, तब कुछ लोग उसके साथ आ मिले। ये 400 लोग थे, जो असन्तुष्ट, संकटग्रस्त और कर्ज़ में डूबे हुए थे (1 शमूएल 22:3)। लेकिन ये लोग उसकी सेना बन गए। यह संख्या बढ़कर 600 हो गई (1 शमूएल 23:13)।

इस बहुत कठिन समय के दौरान दाऊद केवल "जीवित रहने के लिए संघर्ष" कर रहा था, लेकिन वह विकास भी कर रहा था। उसके चारों ओर लोगों की एक सेना तैयार हो गई थी। हम बाद में देखेंगे कि ये 400 लोग अन्ततः दाऊद की सेना के सामर्थी योद्धा बन गए। एक योद्धा ने स्वयं को बढ़ाया और ऐसे लोगों में से 400 से अधिक सामर्थी योद्धाओं को तैयार किया, जो असन्तुष्ट, संकटग्रस्त और कर्ज़ में डूबे हुए थे।

हमारे लिए एक मुख्य सीख:

गति को बनाए रखने और आगे बढ़ाने के लिए—भले ही आप केवल जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहे हों, फिर भी बढ़ते रहें।

गति को बनाए रखने और आगे बढ़ाने के लिए—अपने चारों ओर लोगों को तैयार करें। जब वे बढ़ेंगे, तो आप भी बढ़ेंगे।

इस समय के दौरान दाऊद के विकास के कुछ महत्वपूर्ण तरीके निम्नलिखित हैं। ये ऐसे तरीके भी हैं जिनसे हम अपनी प्राप्त गति को बनाए रखने और आगे बढ़ाने के लिए विकसित हो सकते हैं।

परमेश्वर की वाणी सुनना सीखें

इस समय के दौरान दाऊद के विकास के प्रमुख तरीकों में से एक था परमेश्वर की बात सुनना सीखना।

हम जानते हैं कि भविष्यवक्ता शमूएल का प्रभाव उसके जीवन में था।

बाद में हम देखते हैं कि भविष्यवक्ता गाद भी उसके जीवन में मार्गदर्शन देता है (1 शमूएल 22:5)।

दाऊद स्वयं बार-बार परमेश्वर से पूछता था (1 शमूएल 23:2–4, 9; 30:1–6)। वह एपोद (ऊरीम और तुम्मीम) के द्वारा परमेश्वर से दिशा-निर्देश माँगता था।

यह दाऊद के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। बाद में राजा बनने पर भी वह बड़े निर्णयों के लिए परमेश्वर से पूछना सीख चुका था। परमेश्वर ने उसे मन्दिर की योजनाओं के विषय में भी मार्गदर्शन दिया, जिसे बाद में सुलैमान ने बनाया।

गति को बनाए रखने और आगे बढ़ाने के लिए—परमेश्वर की वाणी सुनना सीखें। केवल परमेश्वर ही आपको विश्वास से विश्वास, सामर्थ्य से सामर्थ्य और महिमा से महिमा तक ले जा सकता है।

लोगों का सम्मान करना सीखें

अपने जीवन के इस चरण के दौरान हम देखते हैं कि दाऊद ने लोगों का सम्मान किया।

उसका पहला कदम अपने माता-पिता की देखभाल करना था (1 शमूएल 22:3)।

उसने बार-बार राजा का सम्मान किया। जब उसे राजा शाऊल को मारने का अवसर मिला, तब भी उसने उसे मारने से इनकार कर दिया। वह यहोवा के अभिषिक्त के विरुद्ध अपना हाथ नहीं उठाना चाहता था। उसने परमेश्वर द्वारा नियुक्त नेताओं (शाऊल) का सम्मान किया। वह अपने राज्य के लिए परमेश्वर के समय पर भरोसा करता रहा। 1 शमूएल 24:5–7; 1 शमूएल 26:9–11। बुराई पर भलाई से जय पाएँ (रोमियों 12:19–21)। अवसर के बजाय चरित्र के विकास को चुनें। हम बदला नहीं लेते। हमारा निर्दोष ठहराया जाना परमेश्वर की ओर से आता है।

उसने अपने योद्धाओं की टीम का भी सम्मान किया—उन लोगों का भी जो युद्ध में गए और उनका भी जो पीछे रह गए। 1 शमूएल 30:24–25।

जिकलग में अपनी विजय के बाद, दाऊद ने यहूदा के पुरनियों का सम्मान किया और अपनी विजय से प्राप्त वस्तुओं में से कुछ उन्हें भेजीं। 1 शमूएल 30:26

राजा शाऊल और योनातान की मृत्यु का समाचार मिलने पर, दाऊद ने अपनी प्रतिक्रिया में उनका सम्मान किया। 2 शमूएल 1

मुख्य सीख:

गति को बनाए रखने और आगे बढ़ाने के लिए—लोगों का सम्मान करना सीखें। लोगों के साथ आदर से व्यवहार करें और उन्हें वह सम्मान दें जिसके वे योग्य हैं। जब आप सम्मान बोते हैं, तो परमेश्वर स्वर्ग से मिलने वाले सम्मान के द्वारा आपके जीवन पर अनुग्रह करेगा।

परमेश्वर में स्वयं को मजबूत करना सीखें

1 शमूएल 30:1–6

इस चरण के अन्त की ओर, दाऊद ने एक बड़ी चुनौती का सामना किया। जब वह वहाँ नहीं था, तब अमालेकियों ने जिकलग पर आक्रमण करके सब कुछ और सभी लोगों को अपने साथ ले गए थे। जब दाऊद और उसके सैनिक वापस लौटे, तो वे पूरी तरह टूट गए। उसके सैनिक दाऊद से नाराज़ भी थे और उसे पत्थरवाह करने के बारे में सोच रहे थे। इस महत्वपूर्ण समय में दाऊद ने स्वयं को परमेश्वर में प्रोत्साहित किया और मजबूत किया—अपने आप, अकेले। उसने परमेश्वर से मार्गदर्शन प्राप्त किया और अपने लोगों का नेतृत्व किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने अन्ततः वह सब वापस प्राप्त कर लिया जो उन्होंने खोया था।

गति को बनाए रखने और आगे बढ़ाने के लिए—परमेश्वर में स्वयं को मजबूत करना सीखें। ऐसा तब भी करें जब आपको यह काम अकेले, अपने आप ही करना पड़े।

इस चरण के दौरान लिखे गए होने की सबसे अधिक सम्भावना वाले भजन:

ये भजन प्रकट करते हैं कि दाऊद के जीवन के इस चरण के दौरान उसके हृदय में क्या चल रहा था। ये हमारे द्वारा चर्चा की गई अधिकांश बातों की पुष्टि करते हैं।

भजन 25: परमेश्वर के मार्गदर्शन की खोज

भजन 35: अन्यायपूर्ण विरोध के विरुद्ध विनती

भजन 36: दुष्टता और परमेश्वर की दया के बीच अन्तर

भजन 37: दुष्टों से ईर्ष्या करने के बजाय परमेश्वर की बाट जोहना सीखना। यह दाऊद की लोगों का सम्मान करने और दूसरों की सफलता या अन्याय को अपनी प्रतिक्रिया निर्धारित न करने देने की विकसित होती समझ से मेल खाता है।

भजन 40: परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की गवाही

भजन 41: असहाय लोगों के प्रति चिन्ता

भजन 62: केवल परमेश्वर ही शरणस्थान है

भजन 65: परमेश्वर के प्रबन्ध के लिए स्तुति